

प्रभाकर पाण्डेय _____

जन्मतिथि : ०१-०१-१९७६
जन्म-स्थान : गोपालपुर, पथरदेवा, देवरिया (उत्तरप्रदेश)
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (भाषाविज्ञान)

पिछला सात-आठ साल से हिन्दी के सेवा में लागल। एह समय एक शोध सहायक (Research Associate) के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.) मुम्बई के संगणक एवं अभियांत्रिकी विभाग में प्रा० पुष्पक भट्टाचार्य के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में भाषा के क्षेत्र में लागल। कई गो शोध-प्रपत्र राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुत।
प्रयोगशाला के कड़ी: <http://www.cfilt.iitb.ac.in/>
सम्पर्क: prabhakargopalpuriya@gmail.com



माई के ममता



तिजहरियवाँ छाँटी काटत रहनी तवलेकहीं माई घर में से हाँक लगावत निकललि, "ए मझिलू! ए मझिलू! काहाँ बाड़s हो? अरे तनि लवना-ओवना के इंतिजाम क देतs। दिन डूबे जाता।" हम माई के बोलावल सुनि के छँटिकट्टा में से बाहर निकलनी अउरी कहनी, "माई

ते काँहे चिंता कइले बाड़े। हम दुपहरि एवे में लग्गी ले के बड़की बारी गइल रहनी हँ अउर तीन बोझा लवना तुड़ि के ले अइनी हँ। अउरी हँ! उ लवना हम भुसउला घर में ध देले बानी।" हमार इ बाति सुनि के माई कहलसि, "अच्छा! ठीक कइलस हस। हँ, तनि बिहने एगो अउरी काम कइ दिहस, केहू के बोलवाके खोंप छवा दिहस।" हम कहनी, "ठीक बा, बिहने खोपवों छवा देइबि अउर तें कई दिन से देहरी में से गोहूँ निकालि के घाम देखावे के कहत रही, उ हो क देइबि।" हमरी एतना कहते, माई कहलसि, "अरे! हँ, गोहूँ के घाम देखावल त बहुते जरूरी बा काँहे कि उ घुनाइल सुरु हो गइल बा।"

हमार अउरी माई के इ बाति चलते रहे तवलेकहिँ उहवाँ घनेसर भाई साइकिल पर कइगो झोरा लटकवले आ गइने। ओ झोरन में से ऊ एगो झोरा उतारि के माई की ओर बढ़वने अउरी कहने, "लस ए काकी। तोहार तिउना-तरकारी।" हम घनेसर भाई से कहि बइठनि, "घनेसर भाई! लागता तरकुलवाँ की बाजारी गइल रहलस हस?" हमरी एतना कहते, घनेसर भाई बोलि पड़ने, "नाहीं भाई, तरकुलवाँ नाहीं पथरदेवाँ गइल रहनी हँ। आजु बिहनहीं काकी चार-पाँचे किलो सरसों हमरी घरे दे अउवी अउरी कहि अउवी कि बाबू, तनि बाजरी से कवनो निम्नन तिउना ले ले अइहस। वइसे हमरो कुछु कपड़ा-लत्ता किने बाजारी जाहीं के रहल हस त तोहरो तिउना ले ले अइनी हँ।"

घनेसर भाई की जाते, हम माई से पुछि बइठनि, "का रे माई! बिहनवे न झेमड़ा पर से दु गो लउकी, थोड़े घेवड़ा अउरी तिरोई तुड़वीं। ओकरी बादो तें बाजारी से तिउना मँगवले हस?" हमरी एतना कहते माई कहलसि, "तूँ जानत नइखस कि बिहने बड़कू अउरी तोहार भउजी दिल्ली से घरे आवता लोग? का उहो लोग इहे गँवई तरकारी-भाजी खाई लोग? ओही लोगीं खातिर कुछ निम्नन तिउना मँगवनी हँ।" एतना कहि के माई तिउना से भरल झोरा उठवलसि अउरी घर में चलि गइल अउरी हम भँइसी के नादे पर से उकड़ा के लगनी दूहे।

भँइस दुहले के बाद हम दूध ले के घर में गइनी अउरी नदिया में दूध उझिलत समय माई से कहनी, "ए बेरी भइया से कहि के आपन आँखि बनववला के साथे-साथे एगो गैसवो किनवा लिहे ताकि चूल्हि फूँके से तोके आराम मिलो। तोर आँखि खाली एही धुआँ-धक्कड़ के वजह से खराब भइल बा।" माई कहलसि, "अरे बाबू, बेचारू बड़कू तस खाली हमार आँखिए बनवावे खातिर भागल-भागल आवताने। तू उनकर चिठिया नाहीं पढ़ल ह का? ओ में हमार बड़कू साफ-साफ लिखले बाने कि माई! ए बेरी तोर आँखि बनवा देइबि अउर अगिला बेरी आइबि तस दु गो कोठरियो बनवा देइबि। आखिर कबले ओह पलानी में रहबस कुलि।" माई जवना समय इ बाति कहति रहे ओ समय ओकरी आँखि में से खुसी के लोर चू-चू के ओकर अँचरा भिगो देले रहे। हमरो बुझाइल कि अब हमार रोवाई रुकी ना अउर आपन आँखि पोंछत हमहूँ घर में से बाहर आ गइनी।

दूसरे दिन एकदम बिहाने एगो रेक्सा ले के हम चउराहा पर पहुँचि गइनी अउरी भइया-भउजी के बाट जोहे लगनी। ठीक आठ बजे देउरिया की ओर से एगो टेक्सी आ के चउरहा पर रुकलि। अब त हमरी खुसी के ठिकाना ना रहि गइल जब देखनी कि ओमें से भइया अउर भाभी उतरसता लोग। अरे एतने ना, भउजी की कोरा में एगो बाबू देखि के हमार खुसी त अउर भी बढ़ि गइल काहें कि हमरा मालूम ना रहे कि हम काका बनि गइल बानी। हम दउरि के भइया अउर भउजी के गोर लगनी अउर ओ लोगन के बेग-ओग उठा के रेक्सा पर लादे लगनी। सामान-ओमान लदले के बाद भइया अउर भउजी रेक्सा पर बइठि गइल लोग। अउरी रेक्सहवा रेक्सा ले के गाँव के ओर चलि देहलसि। हमहूँ तीरछे दउड़त, भागत-परात घरे चलि अइनी।

रेक्सा दुआरी पर पहुँचते भइया रेक्सा पर से उतरि गइने, पर जब भउजी उतरल चहली त माई इसारा से मना क देहलसि। ऊ दउड़ि के घर में गइलि अउरी एक लोटा पानी, सेनुर-ओनुर ले के आइलि। हम समझि गइनी कि माई झाक देहले के बादे भउजी के उतरे दी। झाक देहले के बाद माई दउड़ि के बाबू के भउजी के कोरा में से ले लेहलसि अउर भउजिओ के उतरे के इसारा कइलसि। भउजी रेक्सा में से उतरि के माई के गोड़ लगली अउरी एकरी बाद घर में चलि गइली। माइयो बाबू के ले के उनकरी पिछवें-पिछवें घर में चलि गइल। ओकरी बाद हम रेक्सा पर से सब सामान उतारि के घर में पहुँचा देहनी।

दू दिन के बाद के बाति हs - हम, भइया अउर भउजी दोगहा में बइठल रहनी जा। उहवें माइयो बाबू के तेल-बुकुवा से मिसत रहे अउरी घुघुआ-मन्ना खेलावति रहे। अचानक भउजी भइया से कहली, "गाँव में जेयादे दिन रहले के ताक नइखे। इ गाँवई आबो-हवा बाबू के सूट नइखे करत। अगर इनके तबियत खराब हो जाई त का कइल जाई?" भउजी के एतना कहते माई टोकलसि, "अरे दुलहिन, इ तूँ का कहतारू? अबहिन त तोहरा लोगन के अइले दुइयो-चार दिन नाही भइल। अबहिन हम अपनी बाबू के भरि आँखि देखियो ना पवनी, तवलेकहीं तूँ जाए-जाए हल्ला करे लगलू।" माई के इ कहल सुनि के तनि भउजी तेज आवाज में कहल सुरु कइली- "ए अम्मा, इ गाँव-घर खाए के दी। लइका के कुछु हो जाई त केहू आगे-पीछे ना आई। (तनि धीरा होके) अउरी हाँ, सहरियो में त घरवा सूने छोड़ि के आइल बानि जा। कहीं चोरी-ओरी हो गइल त के जबाब देई।" माई कुछु कहो एकरी पहिलहीं भइया कहल सुरु कइने, "हाँ रे माई, तोर पतोहा ठीक कहतारी। अब त सहर में आपन खुद के मकानि बा। अबे दू कमरा उपरो बनववनी हँ। एगो गैस सिलिंडर रहल ह त गैस ओरा गइले पर तोरी पतोहा के स्टोपे पर खाना बनावे के पड़त रहल हs तs एगो अउरी गैस सिलिंडर किननी हँ। फोन लगववनी हँ। ए सब में बहुत पइसो खरच हो गइल बा। सब कुछु कीनिए के खाए के बा। ए ही में लइका के बर्थडेउओ मनावे के बा। ओहू में हजार-दु हजार जइबे करी।"

भइया के इ सब बाति सुनि के हमरा रहाइल ना अउर हम पूछि बइठनी, "त का हो भइया! माई के आँखि के का होई?" हमरी एतना कहते फेन से भउजी सुरु हो गइली, "माई के आँखि बनवावल भागल जाता का? पहिले जवन जरूरी बा उ देखल जाव कि आँखि बनवावल जाव। जब सहर के घर के सब बेवस्था ठीक से हो जाई त ओकरी बाद आँखियो बनि जाई। हमनीजान इ थोरे कहतानीजाँ कि आँखि ना बनी।" भइयो कहल सुरु कइने, "माई ते कवनो चिंता मति करु। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाई। अगिला बेर के अवाई में तोर आँखियो बनि जाई अउरी रहे खातिर दुगो घरो।" भइया के इ बाति सुनि के माई कहलसि, "बाबू, हमरा कवनो चिंता नइखे। कहीं रहजाs नीमने रहsजा। पर समय-समय पर घरो-गाँव के सुधि लेत रहsजा।" एकरी बाद माई हमरी ओर ताकि के कहलसि, "ए बाबू, जवन गोहूँ सुखवले बाड़s ओमें से दू बोरा कसि दs अउर हाँ, दू बोरा धनवो कुटा दs। बड़कू के सहर में इ सब किनिए के खाए के पड़त होई अउरी अबहिन पइसा के अभाव बा।" माई के इ बाति सुनि के हम बोरा उठवनि अउरी चुपचाप बाहर चलि गइनी।

एकदिन के बादे का देखतानी कि माई कइगो गठरी-सठरी बाँधsतिया। कवनो में मिट्टा बा, त कवनो में चिउड़ा, अउरी कवनो में खटाई-अँचार। हमके देखते उ रोवाँसु हो के बोलि पड़लि, "ए बाबू, जा एगो रेक्सा बोलवले आवs। अपनी भइया-भाभी के चउरहा पर छोड़ि आवs। दूनू जाने तइयार हो गइल बाटे लोग।" हम चुपचाप घर में से बाहर निकलनी अउर एगो रेक्सा बोला लेअइनी। रेक्सा पर सब सामान-ओमान लादि के भइया अउर भउजी के चउराहा पर पहुँचावे खातिर चलि देहनी। चउराहा पर पहुँचि के ओ लोगन के देउरिया जायेवाली एगो टेक्सी में बइठा देहनी। भइया कहने, "बाबू, कवनो टेंसन मति लिहे। माई के ठीक से देख-भाल करिहे। हम फेनु

जल्दिए लवटबि।" हमरी आँखि में से लोर बहे लागल अउरी हम ओ टेक्सी के तबले देखत रहली जबले ऊ हमरी आँखि से अन्हे ना हो गइल।

टेक्सी के अन्हे होते हमहुँ रोवाइन परान ले के घरे चलि अइनी। माई दुअरवे बइठल रहे। हम दुआरे पर पहुँचि के अबहिन भइंसी के नादे पर से उकड़ावत रहनी तवलेकहीं बहोरनो काका घूमत-घामत उहवें आ गइने। बहोरन काका माई से पुछने, "त का हो भउजी, अब आराम बा ना सुननी हँ कि तोहार पतोहा आइल बाड़ी।" माई कुछु कहो ओसे पहिलहीं हम कहि बइठनि, "ए काका, भउजी अउर भइया आइल त रहल ह लोग पर अजुवे चलि गइल ह लोग।" रमेसर काका कहने, "कवनो बाति ना, पइसा-ओइसा त देइए गइल होई लोग। पहिले अपनी माई के आँखि-आँखि बनवा दऽ।"

हम कुछु बोलनी ना चुप्पे रहि गइनीं। हमार चुप्पी काका के सब समझा देहलसि। उ कहने, "बतावऽ एइसन लइका के कमइले का फायदा बा कि बुढ़ापो में सुख ना मिले।" एकरी बाद अबहीं केहू कुछु बोलो तवलेकहीं घनेसरो भाई उहवाँ आ गइने। आवते बोल पड़ले- "अरे रमेसर काका, एतने नाहीं। कमाइल-धमाइल त दूर, जवन घर में अनाजो-पानी रहल ह ओहू के बोरा में कसि-कसि के काकी उनकरी संघवे भेजवा देहली ह। अरे ओतना अनाज बेंचाइत त एगो का इनकर एगो का, दूनू आँखिया बन गइल रहित।"

अरे इ का? घनेसर भइया के एतना कहते त माई आग-बबूला हो गइल अउरी कहतिया, "ए घनेसर, तनि कम बोलऽ। हमार आँखि बनो चाहें नाहीं ए से तोहरा का? अरे ए बेरी ना अगिला बेर बनी। हमार बाबू लोग निमन रहे, काँहे कि उहे लोग हमार आँखि बा लोग। हमार त सहरियो में मकानि बा। बताव न ए गाँव में केकरा बा?" एतना कहते माई अंचरा के कोना से आँखि पोंछत घर में चलि गइल।